प्रकाशन तिथि : 01 अक्टूबर, 2023
प्रेषण तिथि : 04 अक्टूबर, 2023

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 27 | अंक 14 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

हमारे रक्त की गर्माहट को जगा रहा है संघ

(सोनू गांव में हुआ जुझार बिंकासी शौर्य दिवस समारोह का आयोजन)

क्षत्रिय कौम ने सदैव दूसरों को जगाने का काम किया है लेकिन आज हमारी ऐसी स्थिति हो रही है कि हम दूसरों की ओर टकटकी लगाकर देख रहे हैं कि वे कहां जा रहे हैं, ताकि हम भी वैसा ही करने का प्रयास करें। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें याद दिला रहा है कि हम वो लोग थे जो दूसरों को रास्ता बताया करते थे, जो ऐसा शंखनाद किया करते थे जिससे दूसरे भी जाग जाएं। आज भी हमारा रक्त पवित्र है इसमें कोई संदेह नहीं। लेकिन उस रक्त के गुण सुप्तावस्था में हैं, उस रक्त की गर्माहट ठंडी हो गई है। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमारे हृदय की सुप्तावस्था को जगाने का काम कर रहा है, उस रक्त की ठंडी तासीर में गर्माहट लाने का काम कर रहा है। संघ हमारे इतिहास की राख में से उन अंगारों को खोजने का प्रयास कर रहा है जिनसे वह अग्नि पुनः प्रज्वलित हो सके, जो बिंकासी जैसे हमारे पूर्वजों में थी। लेकिन इसके लिए हमें साधना करनी पड़ेगी, तपस्या करनी पड़ेगी और निरंतर व नियमित रूप से करनी पड़ेगी। श्री क्षत्रिय युवक संघ वही साधना कर रहा है। उपर्युक्त बात जैसलमेर के सोनू गांव में 24 सितंबर को आयोजित जुझार बिंकासी शौर्य स्मृति दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने कही। उन्होंने कहा कि बिंकासी वीरत्व के पुजारी थे। गौ रक्षा के लिए जब उन्होंने पुकार सुनी तो स्वयं को रोक नहीं सके और क्षात्रधर्म का पालन करते हुए समर भूमि में चले गए। उनका सर कट गया फिर भी धड़ लड़ता रहा, क्योंकि उनके अंदर क्षत्रिय का भाव जीवित था।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

पूज्य श्री के चरणों में वंदन कर जन्म शताब्दी समारोह की तैयारियों का आगाज

23 सितंबर को माननीय संघ प्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास पूज्य श्री तनसिंह जी की जन्मस्थली बेरसियाला (जैसलमेर) पहुंचे एवं यहां स्थित पूज्य श्री की प्रतिमा के चरणों में जन्म शताब्दी समारोह के लिए स्थल (जवाहर लाल नेहरु स्टेडियम) के अनुमति पत्र को समर्पित कर समारोह की तैयारियों का आगाज किया। उन्होंने समारोह के सफल आयोजन के लिए पूज्य श्री से प्रार्थना की एवं वहां उपस्थित सहयोगियों से संवाद भी किया।

ममता के बंधनों को काटकर कर्त्तव्य का पालन करना ही क्षत्रियत्व: संघप्रमुख श्री

(पाली में समारोह पूर्वक मनाई लोकदेवता पाबूजी राठौड़ की जयंती)

पाबूजी जैसे महापुरुषों ने ऐसा क्या किया जिसके कारण हम उनकी जयंती मना रहे हैं, उन्हें नमन कर रहे हैं, उनके वंशज होने पर गौरवान्वित हो रहे हैं? इस पर विचार करना आवश्यक है। पाबूजी अपने कर्त्तव्य के पालन के लिए फेरों के बीच ही तलवार से गठजोड़े को काटकर चले गए। विवाह के वातावरण में भी उन्होंने अपने कर्त्तव्य की पुकार को सुना और उसको सुनकर उन्होंने गठजोड़े को हाथ से खोलने में भी समय व्यर्थ करना उचित नहीं समझा और तलवार से ही उसे काटकर चल पड़े। मोह और ममता के बंधनों को काटकर कर्त्तव्य का पालन करना ही क्षत्रियत्व है और इस क्षत्रियत्व को धारण करने के कारण ही हम अपने इन इतिहास पुरुषों को, पुरोधाओं को याद करते हैं, नमन करते हैं और उनके वंशज होने पर गौरवान्वित होते हैं। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

जारी है क्षत्रिय संस्कार निर्माण की कार्यशालाओं का आयोजन

श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा शिविरों के रूप में क्षत्रिय संस्कार निर्माण की कार्यशालाओं का आयोजन निरंतर जारी है। इसी क्रम में 22 से 26 सितंबर की अवधि में विभिन्न स्थानों पर 3 बालिका शिविरों सहित कुल 13 प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुए जिनमें 1500 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शेखावाटी संभाग के चुरू प्रांत के तारानगर गांव में मोहता स्कूल, साहवा रोड में चार दिवसीय प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 22 से 25 सितंबर तक आयोजित हुआ। शिविर का संचालन जुगराज सिंह जुलियासर ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि यहां शिविर में होने वाली सभी गतिविधियों जैसे खेल, सहगीत, प्रार्थना, हवन, चर्चा आदि में पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा दिया गया संघ दर्शन निहित है इसलिए जागृत होकर यहां की प्रत्येक गतिविधि में भाग लें और इस दर्शन को समझते हुए जीवन में उतारने का अभ्यास करें। शिविर में तारानगर, रेडी, गोरीसर, साहवा, तोगावास, मेघसर, दुलेरी, भालेरी, सात मील, मलवास, कांजन आदि गांवों के 70 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। क्षत्रिय विकास संस्थान तारानगर के अध्यक्ष वीर बहादुर सिंह तारानगर व जितेंद्र सिंह कोटडी ने अन्य समाजबंधुओ के साथ मिलकर व्यवस्था में सहयोग किया। बाड़मेर स्थित भारतीय ग्राम्य आलोकायन ट्रस्ट के आलोक आश्रम में बालिकाओं का चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 23 से 26 सितंबर तक आयोजित हुआ। शिविर का संचालन कैलाश कंवर मुंगेरिया ने

(13 प्राथमिक प्रशिक्षण शिविरों में 1500 शिविरार्थियों ने लिया प्रशिक्षण)

किया। उन्होंने बालिकाओं से कहा कि नारी के संस्कारों पर ही समाज की भावी पीढ़ी के संस्कार भी निर्भर करते हैं। शिविर में जयसिंधर, रामसर, लुणु, चूली, सणाऊ, आकोडा, दूधवा, गंगासरा सहित जैसलमेर, बालोतरा व जालोर जिले के 56 गांवों की 275 बालिकाओं ने प्रशिक्षण लिया। बाड़मेर संभाग के गुड़ामालानी प्रांत के भालीखाल में भी इसी अवधि में एक शिविर आयोजित हुआ। बाड़मेर शहर प्रांत प्रमुख छगन सिंह लुणु ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों से कहा कि समाज के प्रति हमारे दायित्व को पूरा करने का सरलतम व श्रेष्ठतम मार्ग श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें बताता है। शिविर में भालीखाल, लोलवा, सिन्धासवा, नया नगर, बूठ, मीठडा, धोरीमन्ना, खारी, डंडाली, गादेवी, महाबार, खडाली सहित 47 गांवों के 256 युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। जोधपुर संभाग के फलोदी-ओसिया प्रांत के जाखण गांव में भी बालिकाओं का चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर भी इसी अवधि में संपन्न हुआ। रतन कंवर सेतरावा ने शिवर का संचालन करते हुए बालिकाओं को श्री क्षत्रिय युवक संघ के उद्देश्य व मार्ग की जानकारी दी। शिविर में जाखण, बापिणी, ईसरु, साथीन, बेदू, ओमपुरा, बिरलोका, सेतरावा आदि गांवों एवं जोधपुर शहर से 160 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

जारी है क्षत्रिय संस्कार निर्माण की कार्यशालाओं का आयोजन

ढिगसरी

रणसीगांव

(पेज एक से लगातार) जोधपुर संभाग के ही भोपालगढ़-बिलाड़ा प्रांत के रणसीगांव में स्थित चंपावत सभा भवन में भी एक शिविर आयोजित हुआ। भरतपाल सिंह दासपा ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि पूर्ण मनोयोग से जो कार्य किया जाता है, उसी में सफलता प्राप्त होती है। शिविर में रणसीगाँव, सोवनिया, सिणला, संबाडिया, खारिया खंगार, साथिन आदि गांवों के 110 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। जयपुर जिले में शाहपुरा तहसील के करीरी गांव में भी एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 23 से 26 सितंबर तक आयोजित हुआ। राम सिंह अकदड़ा ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों से कहा कि अपने स्वधर्म का पालन करके ही हम समाज, राष्ट्र और मानवता की सच्ची सेवा कर सकते हैं। संघ हमें इन शिविरों के माध्यम से इसके लिए तैयार कर रहा है। शिविर में करीरी के अतिरिक्त महरोली, दिवराला, लिसाड़िया, नांगल, मऊ, खन्नीपुरा, सान्दरसर, इटावा भोपजी, जालमसिंह का वास, परोडा, अजीतगढ, मोहनवाडी, जोधपुरा, दूजोद, सुल्ताना, लाखणी, भूणी आदि गांवों के 127 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। विजेन्द्र सिंह करीरी ने ग्रामवासियों के सहयोग से व्यवस्था का जिम्मा संभाला। बीकानेर संभाग में नोखा कोलायत प्रांत के ढिंगसरी गांव के अटल सेवा केंद्र परिसर में भी एक शिविर आयोजित हुआ। शिविर संचालक भागीरथ सिंह सेरुणा ने शिविरार्थियों से कहा कि आज हम अपना कर्त्तव्य भूल गए हैं, जिसे संघ हमें पुनः याद दिला रहा है। शिविर में पुंडलसर, ढिंगसरी, भादला, मोरखाना, दातिना, भादला आदि गांवों के 90 युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। लालसिंह ने अन्य ग्रामवासियों के साथ मिलकर व्यवस्था में सहयोग किया। जैसलमेर संभाग के रामदेवरा-नाचना प्रांत के बोड़ाना गाँव में भी 23 से 26 सितंबर तक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। अमरसिंह रामदेवरा ने शिविर का संचालन करते हुए युवाओं से कहा कि समाज के प्रति समर्पण का भाव रखकर ही हम समाज की सेवा कर सकते हैं। शिविर में आसकंद्रा, ताड़ाना, अवाय, नाचना, खारा, टावरीवाला, खारिया, नोख, मेडी का मगरा, बोड़ाना सहित आसपास के गाँवों के 150 शिविरार्थियो ने भाग लिया। सांचौर प्रांत के डभाल गांव में भी चार दिवसीय शिविर का आयोजन हुआ। ईश्वर सिंह सरण का खेड़ा ने शिविर का संचालन करते हुए कहा कि हमें राजपूत से क्षत्रिय बनने के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए कठोर साधना व अभ्यास को अपनाना होगा। शिविर में डभाल, अचलपुर, कारोला, सुरावा, दांतिया, बावरला, किलवा, सरवाना, चौरा आदि गांवों के 135 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। जालौर जिले के कोराणा गांव में भी एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। हीर सिंह लोड़ता ने शिविर का संचालन करते हुए कहा कि अनुशासन और संयम ही हमारे व्यक्तित्व को निखार सकते हैं। संघ की प्रणाली में इस अनुशासन और संयम का अभ्यास सहज रूप से निहित है। शिविर में बाला, कोराणा, रामा, सुगालिया जोधा, तोड़मी, भवरानी, निबंला, गुड़ा रामा आदि गांवों के 50 युवाओं ने भाग लिया। पूर्वी राजस्थान सम्भाग के दौसा प्रांत में आगरा रोड पर स्थित डिसेंट पब्लिक स्कूल में भी एक बालिका प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 23 से 26 सितम्बर तक हुआ। शिविर का संचालन रतन कंवर सिसरवादा ने किया। उन्होंने बालिकाओं से कहा कि माता के रूप में स्त्री के दायित्व बहुत बड़ा होता है। इस दायित्व को निभाने के लिए जिस धैर्य, स्नेह, सहनशीलता, ज्ञान आदि की आवश्यकता है वह संघ हमें इन शिविरों के माध्यम से प्रदान कर रहा है। शिविर में 70 बालिकाओं ने प्रशिक्षण लिया। प्रांत प्रमुख नानू सिंह रूखासर और श्याम सिंह चिरनोटिया ने स्थानीय समाजबंधुओं के सहयोग से व्यवस्था का जिम्मा संभाला। इसी अवधि में साधना संगम संस्थान कुचामन सिटी के तत्वावधान में श्री क्षत्रिय युवक संघ का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर लाडनूं प्रांत के सांवराद गांव में आयोजित हुआ। शिविर का संचालन लाडनूं प्रांत के प्रांत प्रमुख विक्रम सिंह ढींगसरी ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों को विदाई देते हुए यहां मिले शिक्षण को अपने जीवन में उतारकर पूज्य श्री तनसिंह जी के संदेश के वाहक के रूप में समाज के बीच जाने की बात कही। शिविर में सांवराद, दत्ताऊ, सागु बड़ी, भंडारी, बेगसर, राजलदेसर, खानपुर, छप्पारा, डाबड़ा, सिंघाना, ठाकरियावास, दुदौली आदि गांवों के 45 शिविरार्थी सम्मिलित हुए। जयपुर जिले की चाकसू तहसील में तामडिया भैरु जी मंदिर में भी एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। शिविर का संचालन देवेन्द्र सिंह बरवाली ने किया। उन्होंने शिवरार्थियों से कहा कि आज के समय में व्यक्ति स्वार्थी बनाकर अपने परिवार, अपने समाज और राष्ट्र के प्रति दायित्वों को भूलता जा रहा है। ऐसे में समाज की युवा पीढ़ी में दायित्व बोध को जागृत करना अत्यंत आवश्यक है। शिविर में डीडावता, नगर, तामडिया, बरवाली व सामी गांवों के 45 युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। जयपुर संभाग प्रमुख राजेन्द्र सिंह जी बोबासर भी सहयोगियों सहित शिविर में उपस्थित रहे। युधिष्ठिर सिंह तामडिया व गुलाब सिंह चांदेसरा ने ग्रामवासियों के साथ मिलकर व्यवस्था में सहयोग किया।

तारानगर

जाखण

(पेज एक से लगातार) हमारे रक्त की गर्माहट को जगा रहा है संघ

आज उस गौरवशाली जाति को बचाना सबसे बड़ी चुनौती है जिसने समय की विपरीत परिस्थितियों को देखकर के कभी हार नहीं मानी। जिसने जौहर और शाके किए, सर कटने के बाद जिनका धड़ सैकड़ों मील तक लड़ जाया करता था, जिन्होंने संघर्षों से कभी मुंह नहीं मोड़ा, सदैव अपने धर्म को आगे रखा और उसको बचाने के लिए स्वयं को खपा दिया, जिसके द्वार पर आया हुआ कोई व्यक्ति निराश होकर नहीं लौटता था और जिन्हें आम जन रक्षक के रूप में देखा करते थे। आज की स्थिति में उस कौम के हालात क्या हो गए हैं, यह चिंतनीय विषय है। हम कौन हैं और हम क्यों यहां आए हैं, इसकी हम पहचान कर लें और जब यह पहचान हो जाएगी कि जिस कौम में हमको भगवान द्वारा जन्म दिया गया है, वह कौम कैसी थी तो फिर तनसिंह जी के जो बोल

- 'वह कौम न मिटने पाएगी, ठोकर लगने पर हर बार उठती जाएगी' - हमें समझ में आना शुरू हो जाएंगे। ठोकर लगना स्वाभाविक है लेकिन ठोकर खाकर गिरे रहना महत्ता नहीं है। जो जागृत व्यक्ति होता है, वह पुनः उठता है और फिर से चलने लगता है। जो और अधिक समझदार होता है वह उस पत्थर को भी मार्ग से हटाकर दूसरी जगह डाल देता है जिससे उसके बाद में आने वाले व्यक्ति को भी ठोकर न लगे। संघप्रमुख श्री ने आगे कहा कि यदि हम अपनी किसी कीमती वस्तु को उपेक्षित छोड़ देते हैं, तो जिनके पास उस कीमती वस्तु का अभाव है, वे उस वस्तु को उठाकर, चुरा कर ले जाएंगे। ऐसा ही आज हमारे इतिहास के साथ हो रहा है। हमने अपने इतिहास की उपेक्षा करनी प्रारंभ कर दी, इसीलिए दूसरे लोगों ने उस पर अधिकार जमाना प्रारंभ कर दिया। इसलिए संघ अपने पूर्वजों के इतिहास को सहेजने और उनसे प्रेरणा लेने के लिए ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करता है। डॉ. प्रेम कंवर पुनमनगर ने कहा कि शिक्षा के प्रति वर्तमान पीढ़ी धीरे-धीरे जागृत हो रही है और हमारे क्षेत्र में इसकी नई अलख जगी है। जगदीश सिंह सोनू ने बिंकासी का जीवन परिचय बताया एवं भाटी वंश के इतिहास की जानकारी दी। तन सिंह विजावल, कोजराज सिंह सोनू एवं गोरधन सिंह तेजपाला ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। प्रहलादसिंह सोनू ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। सम्भाग प्रमुख तारेंद्र सिंह झिनझिनयाली ने कार्यक्रम की भूमिका बताई एवं पूज्य श्री तनसिंह जन्म शताब्दी समारोह की जानकारी दी। कार्यक्रम में पूर्व विधायक सांगसिंह, पूर्व विधायक छोटूसिंह, सुनीता भाटी, निरंजन भारती, धनिया नाथ, खेमेन्दसिंह जाम, अंजना मेघवाल, हुकमाराम कुमावत, समन्दर सिंह पुनमनगर, फतेहसिंह रायमला, भंवरसिंह सेउवा, कंवराजसिंह जाम रामगढ़, कुनाल सिंह अड़बाला, हिंदू सिंह म्याजलार सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मातृशक्ति की भी उपस्थिति रही।

बगड़ी नगर (पाली) में समारोहपूर्वक मनाई राव जैता जी की जयंती

पाली जिले के बगड़ी नगर में 18 सितंबर को अखिल भारतीय राव जैताजी संस्थान द्वारा वीर शिरोमणि राव जैताजी जी की जयंती श्री क्षत्रिय युवक संघ के संघप्रमुख माननीय लक्ष्मण सिंह जी बैण्याकाबास के सान्निध्य में समारोह पूर्वक मनाई गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि जैताजी जैसे हमारे पूर्वजों की शौर्यगाथाएं सुनकर हमारे मन में त्वरा जगती है, लेकिन इस त्वरा की समयावधि कितनी है, इस पर विचार करने की आवश्यकता है। इसका कारण क्या है? कारण है कि हमारे घरों में वीरता के वे संस्कार मिलने बंद हो गए हैं। हमारी संस्कृति और इतिहास को हमारे घरों में बच्चों को नहीं बताया जा रहा है। भौतिक समृद्धि को प्राप्त करने के लिए हर कोई दौड़ रहा है लेकिन चरित्र निर्माण, संस्कार निर्माण के कार्य की कोई बात नहीं करता। केवल भाषणों से क्षत्रियत्व को नहीं बचाया जा सकता। केवल महापुरुषों की जयंतियां मनाना ही पर्याप्त नहीं है, उनसे प्रेरणा लेकर वैसा जीवन हम जीना शुरू करें तो ही अपने क्षत्रियत्व

को हम बचा सकते हैं। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज में क्षत्रियोचित संस्कारों के निर्माण का कार्य कर रहा है। संघ जामवंत की भांति हमारी सोई हुई शक्ति को जगाने का कार्य कर रहा है। लेकिन यह कार्य कठिन है। जैसे कुनैन की दवाई कड़वी होती है, ऐसी ही संघ की पद्धति भी कष्टपूर्ण है। आज हमारे परिवारों में बिखराव हो रहा है, हमारी युवा पीढ़ी अपसंस्कृति से प्रभावित हो रही है और इस प्रभाव को रोकने के लिए हम कोई भी प्रयास नहीं कर पा रहे हैं। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविरों व शाखाओं में अपने बालक बालिकाओं को भेजना आवश्यक है ताकि उन्हें ऐसा वातावरण मिल सके जिसमें उन्हें अपने इतिहास, संस्कृति और धर्म को जानकर उसके अनुरूप आचरण के अभ्यास का अवसर मिले। पूर्व राज्यसभा सांसद नारायण सिंह माणकलाव ने कहा कि राव जैता जी जैसे महापुरुषों के कारण ही हमारा इतिहास इतना गौरवशाली बना है। जो अपनी मातृभूमि के सम्मान के लिए सर्वस्व त्याग कर देते हैं, उन्हीं वीरों को आने वाली पीढ़ियां नमन करती हैं। मारवाड़ राजपूत सभा के अध्यक्ष हनुमान सिंह खांगटा, प्रादेशिक परिवहन अधिकारी प्रकाश सिंह भदरू, शिवजी सिंह सिसरवादा, श्यामसिंह सजाड़ा आदि वक्ताओं ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया एवं राव जैता जी के जीवन से वीरता, देशभक्ति, त्याग और स्वाभिमान की प्रेरणा लेने की बात कही। जैताजी संस्थान के अध्यक्ष भगवत सिंह बगड़ी ने सभी का स्वागत करते हुए संस्थान के उद्देश्य के बारे में जानकारी दी।

माननीय संघप्रमुख श्री का दो दिवसीय बीकानेर प्रवास

माननीय संघ प्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास 15 व 16 सितंबर को बीकानेर के दो दिवसीय प्रवास पर रहे। 14 सितंबर को रात्रि को संघ प्रमुख श्री बीकानेर पहुंचे एवं स्थानीय कार्यालय नारायण निकेतन में रात्रि विश्राम किया। 15 सितंबर को वे लूणकरणसर क्षेत्र के सोढवाली गांव पहुंचे जहां उनके सान्निध्य में स्नेहमिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संघप्रमुख श्री ने कहा कि इस संसार में हम सभी अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दिन-रात प्रयत्न करते हैं, लेकिन ईश्वर ने हमें जिस उद्देश्य के लिए यह अमूल्य मानव जीवन प्रदान किया है, उसकी ओर हम चिंतन नहीं करते। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें हमारे जीवन के उसी मूल हेतु का बोध कराता है। उस हेतु की पूर्ति के लिए हमारा जीवन व्यवहार, हमारा आचरण कैसा होना चाहिए, उसका अभ्यास संघ हमें शाखाओं व शिविरों के माध्यम से कराता है। खींव सिंह सुल्ताना ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के उद्देश्य व कार्य प्रणाली

के बारे में बताते हुए पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह की जानकारी उपस्थित समाजबंधुओ को दी एवं सभी से दिल्ली में होने वाले मुख्य समारोह में सहभागी बनने का निवेदन किया। कार्यक्रम में निकटवर्ती गांवों के समाजबंधु मातृशक्ति सहित सम्मिलित हुए। यहां से माननीय संघप्रमुख श्री पुनः बीकानेर स्थित नारायण निकेतन कार्यालय पहुंचे जहां उनके सान्निध्य में बीकानेर शहर में रहने वाले स्वयंसेवकों की बैठक रखी गई जिसमें जन्म शताब्दी वर्ष के अंतर्गत संभाग में हुए कार्यों की समीक्षा की गई एवं आगे के लिए कार्य योजना पर चर्चा हुई। अगले दिन 16 सितंबर को वे कानासर गांव पहुंचे। यहां स्थानीय विद्यालय परिसर में स्नेहमिलन में समाज बंधुओ से चर्चा करते हुए संघ प्रमुख श्री ने कहा कि हमने राजपूत के घर में जन्म लिया है यह ईश्वर की हम पर कृपा है, लेकिन यदि हम क्षत्रिय के गुणों का अभ्यास नहीं करेंगे तो हम क्षत्रिय कहलाने के अधिकारी नहीं बनेंगे। अपनी उपयोगिता को हम तभी बनाए रख सकते हैं जब हम अपने स्वधर्म का पालन करें। इसी में हमारे जीवन की सार्थकता है। राजेंद्र सिंह आलसर ने श्री क्षत्रिय युवक संघ एवं पूज्य श्री तनसिंह जी का परिचय दिया। कार्यक्रम में मातृशक्ति की भी उपस्थिति रही। इसके पश्चात संघप्रमुख श्री पुनः बीकानेर पहुंचे व वहां से रेलमार्ग से पाली के लिए प्रस्थान किया।

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त गुजरात में संदेश यात्रा

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त 93 वर्षीय वरिष्ठ स्वयंसेवक बलवंत सिंह जी पांची द्वारा पूरे गुजरात के 93 गांवों में संपर्क के लक्ष्य के साथ संदेश यात्रा का आयोजन किया जा रहा है जिसके अंतर्गत 15 से 17 सितंबर तक

प्रतिदिन आठ गांवों की यात्रा की गई। पहले दिन लोधिका तहसील में हरभमजी राज गरासिया राजपूत छात्रालय से यात्रा प्रारंभ हुई जिसमें कागसियाला, वीरवा, खांभा, रावकी, तरवडा, लोधीका, चांदली और छापरा गांवों में संपर्क किया गया। दूसरे दिन कोटडा सांगानी तहसील के पडवला, राजपरा, सोलिया, हडमताला, कोटडा, मानेकवाडा, पांच तलावडा व भाडवा गांव में संपर्क किया गया। तीसरे दिन 17 सितंबर को पडधरी तहसील के वनपरी, मोटी चणोल, नानी चणोल, फतेपुर, विसामन, खाखरा, खोखरी व हडमतिया गांवों में संपर्क किया गया। यात्रा में प्रवीणसिंहजी सोलिया, छनुभा पछेगाँव, विक्रमसिंह धोलेरा, कृष्णसिंह थलसर, रघुवीरसिंह पेघडा, जयदेवसिंहजी चेर, देवेन्द्रसिंह राजकोट, युवराज सिंह, इंद्रसिह व अन्य सहयोगी साथ रहे। इसी प्रकार 24 सितंबर को भी 8 गांवों में संपर्क यात्रा की गई जिसमें उचडी, वेजोदरी, जांजमेंर, मधुवन, खंढेरा, रोजीया, वाटलिया, वेलावदर गांवों में समाजबंधुओ को जन्म शताब्दी वर्ष का संदेश दिया गया। मंगल सिंह धोलेरा, चंद्र सिंह खंढेरा, अजीत सिंह थलसर और मयूरध्वज सिंह शाहपुर भी यात्रा में शामिल रहे।

ढिंगसरी (बीकानेर) में स्नेहमिलन का आयोजन

नोखा प्रांत के ढिंगसरी गांव में 25 सितम्बर को श्री क्षत्रिय युवक संघ का स्नेहमिलन कार्यक्रम विद्यालय परिसर में आयोजित हुआ। वरिष्ठ स्वयंसेवक जोरावर सिंह भादला ने कार्यक्रम को संबोधित

करते हुए कि इस भौतिकवादी युग में मानव तो है मगर मानवता दम तोड़ रही है। ईश्वर ने क्षत्रियो को रक्षण का दायित्व दिया था मगर आज क्षत्रिय वह दायित्व भूल गया है। संसार में भ्रष्टाचार व अनाचार का बोलबाला है। जिसका मुख्य कारण है संस्कार का अभाव। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ संस्कार निर्माण का कार्य कर रहा है। बीकानेर संभाग प्रमुख रेवन्त सिंह जाखासर ने पूज्य तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन प्रान्त प्रमुख करणी सिंह भेलू ने किया। कार्यक्रम में गिरधारी सिंह, रुघवीर सिंह, धर्मवीर सिंह सरपंच, देवी सिंह, कुशाल सिंह, अर्जुन सिंह, छेलू सिंह, किशन सिंह, पहाड़ सिंह, लाल सिंह, धन्ने सिंह, महेंद्र सिंह, भंवर सिंह, हड़मान सिंह आदि उपस्थित रहे।

जोजावर (पाली) में सहयोगी वर्ग की बैठक आयोजित

पाली जिले के जोजावर में माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास के सान्निध्य में 17 सितंबर को एक बैठक का आयोजन हुआ जिसमें पाली प्रांत के सहयोगी उपस्थित रहे। सहयोगियों द्वारा संघ और समाज कार्य के विषय में विभिन्न जिज्ञासाएं और शंकाएं रखी गई जिनका संघप्रमुख श्री ने समाधान किया। उन्होंने सफलता-असफलता से निरपेक्ष रहते हुए समाज को आराध्य मानने और साथ मिलकर उसकी सेवा करने की बात कही। मारवाड़ जंक्शन विधायक खुशवीर सिंह जोजावर व श्री क्षत्रिय युवक संघ के पाली प्रांत प्रमुख महोब्बत सिंह धींगाणा भी सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

संपादकीय

निषेध का नहीं विधायकता का सृजन करें

मनुष्य सभ्यता का निर्माण करता है, यह उसकी जातीय विशेषता है। मानव सभ्यता के विकास का आधार व्यवस्थाओं का क्रम है। विभिन्न व्यवस्थाओं के माध्यम से ही मनुष्य अपने विकास की भूमिका तैयार करता है। पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, प्रशासनिक, न्यायिक आदि व्यवस्थाएं मानव सभ्यता के विकास चक्र की धुरी बनती हैं। हमारा व्यक्तिगत जीवन भी जितना व्यवस्थित हो, उतना उसमें सौंदर्य प्रकट होता है। अतः यह कहना उपयुक्त होगा कि मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष को व्यवस्था गहराई से प्रभावित करती है और इसलिए हमारे व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक जीवन के संदर्भ में व्यवस्था के महत्व को समझना और उसके मुख्य पक्षों को जानना हमारे दृष्टिकोण को अधिक संतुलित और सम्यक बना सकता है।

कोई भी व्यवस्था हो, उसके दो मुख्य व अनिवार्य पक्ष हैं - विधायक व निषेधात्मक। इन दोनों पक्षों का सही अनुपात ही किसी व्यवस्था के उद्देश्य को पूरा करने में मुख्य कारक है। यदि यह अनुपात बिगड़ जाए तो व्यवस्था में विकृति पैदा हो जाती है और वह व्यवस्था जिस समस्या के समाधान के लिए बनी है, उसी समस्या को बढ़ाने वाली बन जाती है। आज अधिकांश क्षेत्रों में यही घटित हो रहा है। कोई भी व्यवस्था आदर्श तभी बनती है जब उसमें विधायक उपाय प्रधानता में रहें और निषेधात्मक उपाय न्यूनतम मात्रा में प्रयुक्त किए जाते हों। लेकिन नकारात्मकता के वर्तमान प्रवाह ने प्रत्येक व्यवस्था में विधायक और निषेधात्मक पक्ष के इस अनुपात को बिगाड़ दिया है। आज हर व्यवस्था निषेधात्मक उपायों तक सीमित बनती जा रही है और विधायक उपायों को उपेक्षित किया जा रहा है। इसे हमारे सामाजिक जीवन में दृष्टिगत हो रहे कुछ उदाहरणों से अधिक स्पष्टता से समझा जा सकता है। आज हमारे समाज के अनेक व्यक्ति, चिंतक, वरिष्ठ आदि समाज की युवा पीढ़ी में आ रही विकृतियों की चर्चा करते हैं, सोशल मीडिया पर फूहड़ फिल्मी गानों पर बनाए वीडियो आदि को साझा करके अपने आप को प्रदर्शन की सामग्री बनाने को पतन का मार्ग बताते हैं, आज के मुक्त परिवेश में विजातीय प्रभावों में आकर अपनी संस्कृति और परंपरा को भुलाने की पीड़ा व्यक्त करते हैं।

यह चिंता और पीड़ा उचित भी है क्योंकि समाज में ये समस्याएं वास्तव में पनप रही हैं और हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक पतन का मार्ग खोल रही हैं। लेकिन ये पीड़ा और चिंता व्यक्त करने वालों के द्वारा इन समस्याओं के समाधान के लिए जो उपाय सुझाए जा रहे हैं वे विधायक और निषेधात्मक पक्ष के बिगड़े हुए संतुलन, जिसका ऊपर वर्णन किया गया है, को ही दर्शाते हैं। अधिकांशतया यही उपाय सुझाए जाते हैं कि हम बालक-बालिकाओं को सोशल मीडिया से दूर रखें, उन्हें बाहरी और विजातीय प्रभावों के संपर्क में ही न आने दें, उन पर कड़ा अनुशासन कायम करें आदि। लेकिन ये सभी उपाय निषेधात्मक हैं और केवल इन्हीं पर निर्भर रहना एकपक्षीय और अवैज्ञानिक पद्धति है। बिना सकारात्मक उपायों का आधार प्रदान किए ये निषेध समस्या को और अधिक बढ़ाने वाले ही सिद्ध होते हैं। यदि व्यक्ति को भूख लगी है और उसे पौष्टिक और स्वादिष्ट भोजन उपलब्ध नहीं है तो वह अभक्ष्य वस्तु को खाकर भी अपनी क्षुधा शांत करेगा ही। इस समस्या का वास्तविक उपाय व्यक्ति को अभक्ष्य का भक्षण करने से रोकना मात्र नहीं है बल्कि उसे उचित भोजन उपलब्ध करवाना ही है, यही विधायक उपाय है। इसके बाद भी यदि व्यक्ति केवल स्वाद या अन्य किसी कारण से स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद वस्तु का सेवन करना चाहता है तो उस समय निषेध का प्रयोग करना भी उचित है। अतः निषेधात्मक उपाय केवल तभी सार्थक हो सकते हैं जब वे विधायक उपाय की ठोस आधारभूमि पर खड़े हों। हम विचार करें कि युवाओं को नकारात्मक वस्तुओं से दूर रखने का निषेधात्मक उपाय सुझाते समय क्या हम उनकी ऊर्जा के नियोजन के लिए कोई सकारात्मक क्षेत्र उन्हें उपलब्ध कराने का प्रयत्न करते हैं? क्या हम बच्चों की सृजन क्षमता को प्रकट होने के लिए कोई श्रेष्ठ माध्यम प्रदान कर पाते हैं? क्या हम उन्हें कुसंग से बचाने के लिए सत्संगति का विकल्प उपलब्ध करवा पाते हैं? अधिकांशतया हम ऐसा न करके केवल निषेध तक सीमित रह जाते हैं और इसलिए ऐसे उपाय कालांतर में समस्या को और बढ़ाने वाले ही सिद्ध होते हैं। यह प्रक्रिया हमारे परिवार, समाज आदि सभी स्थानों पर घटित हो रही है। आज सोशल मीडिया पर विभिन्न जातियों, समुदायों आदि का टकराव चरम पर दिखाई देता है। हर जाति-पंथ के लोग अन्य जाति-पंथों को दुश्मन घोषित करते नजर आते हैं। समझदार लोग इस नफरत से दूर रहने की, उसका प्रसार न करने की बात करते हैं, लेकिन विभिन्न समुदायों और जातियों में आपसी सौहार्द और समन्वय के निर्माण के लिए जिस संवाद और संपर्क की आवश्यकता है, क्या उसके लिए कहीं पर कोई उपाय किए जा रहे हैं? बढ़ते अपराधों को रोकने के लिए पुलिस और न्यायालय जैसे निषेधात्मक उपायों को बढ़ाने की बात कही जाती है लेकिन व्यक्ति के भीतर आपराधिक प्रवृत्ति को पनपने से रोकने के लिए जिस प्रकार के सकारात्मक वातावरण की आवश्यकता होती है, उसके निर्माण के लिए आज कौन प्रयास करता दिखाई देता है? इस तरह से हम देखेंगे तो पाएंगे कि आज हमारी सभी व्यवस्थाओं से विधायकता या सकारात्मक खोती जा रही है और उसी के कारण वे सभी व्यवस्थाएं जो समाज के अस्तित्व को बनाए रखने का दायित्व निभाती थी आज वे ही समाज को विखंडित करने का कारण बनती जा रही हैं। आज सब ओर निषेध का शोर सुनाई देता है लेकिन विधायकता के सृजन के लिए कोई आगे नहीं आता।

श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज में इसी विधायकता के सृजन का कार्य कर रहा है। संघ की कार्य प्रणाली निषेध पर नहीं बल्कि कर्म के विधायक आधार पर खड़ी है और इसीलिए वह समाज की युवा पीढ़ी को बुराइयों से दूर रहने का उपदेश मात्र नहीं देता बल्कि युवाओं में संस्कारों के सृजन के लिए उन्हें शाखाओं और शिविरों का श्रेष्ठ वातावरण उपलब्ध करवाता है, उन्हें निरंतर अपने संपर्क में रखकर उनकी ऊर्जा के श्रेष्ठ और सकारात्मक कार्यों में नियोजन का मार्ग खोलता है। यह उपाय दीर्घकालीन और श्रमसाध्य अवश्य है लेकिन हमारी पारिवारिक और सामाजिक व्यवस्था को स्वस्थ बनाये रखने के लिए यही उपाय कारगर है। हमारी पारिवारिक और सामाजिक व्यवस्था के आधार में विधायकता की पुनर्स्थापना के बाद ही अपसंस्कृति और विजातीय तत्वों के प्रति निषेध का उपाय भी प्रभावी बन सकता है अन्यथा यह निषेध जड़ता और कट्टरता में बदलकर परिवार और समाज के लिए विनाशकारी ही सिद्ध होगा। इसलिए आएं, हम जीवन के सभी पक्षों में निषेध से पहले विधायकता के सृजन का मार्ग चुनें और हर प्रकार की व्यवस्था को, जिसके भी हम अंग हैं, संतुलित और सौंदर्य से परिपूर्ण बनाने में सहयोगी बनें।

सिद्धार्थ सिंह चौहान बने इसरो में वैज्ञानिक

सिद्धार्थ सिंह चौहान का भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) में वैज्ञानिक के पद पर चयन हुआ है। राजस्थान के जोधपुर जिले के गांव पीपरली (धुंधाडा) गांव के मूल निवासी सिद्धार्थ सिंह 22 वर्ष की आयु में हैदराबाद स्थित इसरो के एडवांस्ड डाटा प्रोसेसिंग रिचर्स संस्थान एड्रिन में प्रथम श्रेणी वैज्ञानिक के रूप में नियुक्त हुए हैं। सिद्धार्थ सिंह चौपासनी स्कूल जोधपुर से उच्च माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत जेईई एडवांस परीक्षा उत्तीर्ण कर आईआईटी इंदौर में चयनित हुए। अंतरिक्ष क्षेत्र में विशेष रूचि होने के कारण उन्होंने भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एव प्रौद्योगिक संस्थान (आईआईएसटी) तिरुअनंतपुरम से इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन में बीटेक में प्रवेश लिया तथा अध्ययन के दौरान ही उत्कृष्ट प्रदर्शन के कारण सीधे इसरो में वैज्ञानिक के पद पर चुने गए हैं।

बजरंग द्वार शाखा का द्वितीय स्थापना दिवस मनाया

श्री क्षत्रिय युवक संघ के जयपुर संभाग की बजरंग द्वार शाखा का द्वितीय स्थापना दिवस 20 सितंबर को शाखा स्थल पर मनाया गया। संघ के केंद्रीय कार्यकारी गजेन्द्र सिंह आऊ ने शाखा के महत्व के बारे में बताते हुए कहा कि सिद्धांतों के अनुरूप नियमित और निरंतर अभ्यास से ही वे सिद्धांत हमारे आचरण के अंग बनते हैं। पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा दिया गया श्री क्षत्रिय युवक संघ का दर्शन संपूर्ण जीवन दर्शन है और इसे जीवन में ढालने का सरलतम मार्ग है शाखा। उन्होंने शाखा में नियमित रहने और नए साथियों को जोड़ने की बात भी कही। संभाग प्रमुख राजेन्द्र सिंह बोबासर ने इस माह में आयोजित होने वाले शिविर की जानकारी दी एवं सभी से शिविर में चलने का अनुरोध किया।

प्रो. सतपाल सिंह बिष्ट बने अल्मोड़ा विवि के कुलपति

प्रो. सतपाल सिंह बिष्ट को सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा के कुलपति के पद पर नियुक्त किया है। नैनीताल (उत्तराखंड) के मूल निवासी सतपाल सिंह वर्तमान में कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल में प्राणी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने वर्ष 1989 में कुमाऊँ विवि के डीएसबी परिसर से प्राणी विज्ञान विभाग से एमएससी करने के बाद डीएसबी परिसर से ही पीएचडी की तथा बायोटेक में शोध कार्य किया। कुमाऊँ विवि में वे वर्ष 2013 से सेवाएं दे रहे हैं। वे पूर्व में आईक्यूएसी निदेशक, परीक्षा नियंत्रक एवं रुसा कोर्डिनेटर भी रह चुके हैं।

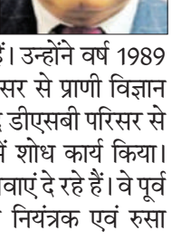

विशेष शाखाओं का आयोजन कर दिया जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त विशेष साप्ताहिक शाखाओं का आयोजन करके समाजबंधुओं को दिल्ली में आयोजित होने वाले मुख्य समारोह में पहुंचने का निमंत्रण देने का क्रम निरंतर जारी है। 17 सितंबर को चितौड़गढ़ जिले की भदेसर तहसील के बुद्धपुरा गांव में विशेष साप्ताहिक शाखा का आयोजन किया गया। सामूहिक यज्ञ के पश्चात दिलीप सिंह रूद ने जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त किए जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी दी, साथ ही युवा पीढ़ी को संस्कारवान बनाने के लिए संघ के शिविरों में भेजने का निवेदन किया। अजमेर जिले की रूपनगढ़ तहसील के जाजोता गांव स्थित रघुनाथ जी के मंदिर में भी इसी दिन विशेष शाखा का आयोजन हुआ। अजमेर प्रांत प्रमुख विजय राज सिंह जालिया सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। निंबाहेड़ा तहसील के टिलाखेड़ा गांव में भी विशेष साप्ताहिक शाखा का आयोजन किया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली ने समाजबंधुओं को शिविर व शाखा के माध्यम से युवा पीढ़ी को संस्कारवान बनाने की संघ की कार्य शैली के बारे में विस्तार से बताया एवं 28 जनवरी को दिल्ली में आयोजित होने वाले जन्म शताब्दी समारोह में निंबाहेड़ा मंडल से अधिक से अधिक संख्या में सम्मिलित होने का निवेदन किया। 24 सितंबर को अजमेर प्रांत की विशेष साप्ताहिक शाखा का आयोजन ढिगारिया, सरवाड़ में किया गया।

देशराज सिंह लिसाड़ीया द्वारा श्री क्षत्रिय युवक संघ व जन्म शताब्दी समारोह के बारे में जानकारी दी गई। प्रांत प्रमुख विजयराज सिंह जालियां अन्य सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। 24 सितंबर को ही श्री सांवलिया जी के पास स्थित श्री गणेश चौक करौली में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। इसी दिन वागड़ प्रांत में विशेष साप्ताहिक शाखा का आयोजन बाँसवाड़ा जिले के बाई का गड़ा एवं कोटड़ा छोटा गांव में किया गया जिनमें शम्भू सिंह लाम्बापारड़ा के द्वारा श्री क्षत्रिय युवक संघ के बारे में जानकारी दी गई। सभी कार्यक्रमों में समाजबंधुओं को जन्म शताब्दी वर्ष पताका व संघ साहित्य उपलब्ध करवाया गया। 26 सितंबर को बांसवाड़ा जिले के पादर एवं जेथाजी का गड़ा में भी विशेष शाखा का आयोजन हुआ।

बालोत राजपूत प्रतिभा सम्मान समारोह व कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव का आयोजन

जालौर जिले के बेदाना गांव स्थित आशापुरा मंदिर अभय धाम में 8 सितंबर को बालोत राजपूत प्रतिभा सम्मान समारोह व कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव का आयोजन किया गया। गढ़ सिवाना के संत गोपाल राम महाराज के सान्निध्य में आयोजित इस समारोह में बालोत पट्टे के अंतर्गत आने वाले गांवों के बालोत राजपूत वर्ग के दसवीं, बारहवीं, स्नातक व अधिस्नातक में अव्वल रहे 40 विद्यार्थियों के साथ राजकीय सेवा में चयनित व राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता, स्काउट एवं गाइड, एन सी सी सहित अन्य वर्ग में विशेष उपलब्धि प्राप्त करने वाले 21 युवाओं को सम्मानित किया गया। समारोह के साथ ही कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव भी हर्षोल्लास से मनाया गया। इस समारोह हेतु सामूहिक प्रसादी का आयोजन श्री अभय नोबल्स उ.मा.वि. तखतगढ के शंभू सिंह बालोत द्वारा किया गया। प्रतिभा सम्मान समारोह में पुरस्कार वितरण लक्ष्मण सिंह बेदाना की ओर से किया गया। इस अवसर पर राव भंवर सिंह डोडीयाली, कर्नल भवानी सिंह अगवरी, लालसिंह धानपुर, डॉ. गोविंद सिंह चुंडावत, हनवंत सिंह बालोत सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। मंच संचालन अचल सिंह बेदाना ने किया।

15 नवंबर को आयोजित होगा श्री पिथोरा स्मृति दिवस

आगामी 15 नवंबर (कार्तिक सुदी दूज) को जैसलमेर संभाग के चांदन प्रांत में स्थित हिंद सिंध के लोकदेवता पिथोरा जी का स्मृति दिवस मूलाना गांव में मनाया जाएगा। पूज्य श्री तन सिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त आयोजित होने वाले कार्यक्रम का पोस्टर विमोचन श्री क्षत्रिय युवक संघ के संघप्रमुख माननीय लक्ष्मण सिंह जी बैण्याकाबास, डेलासर मठाधीश महादेवपुरी जी महाराज एवं पीर श्री पिथोरा जी परिवार के चतर सिंह जी द्वारा 24 सितंबर को डेल्हा जी शौर्य स्मृति दिवस के दौरान किया गया।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
01.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	21.10.2023 से 24.10.2023 तक	**भायला,** सहारनपुर, उत्तरप्रदेश।
02.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	22.10.2023 से 24.10.2023 तक	**विजयवाड़ा,** आंध्रप्रदेश।
03.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	22.10.2023 से 25.10.2023 तक	**राजमथाई,** जैसलमेर।
04.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	22.10.2023 से 25.10.2023 तक	**सलखा,** जैसलमेर।
05.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	22.10.2023 से 25.10.2023 तक	**छगनपुरी की छतरी,** साजित, जैसलमेर।
06.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	21.10.2023 से 24.10.2023 तक	**कोलायत,** बीकानेर।
07.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	04.11.2023 से 10.11.2023 तक	**गड़ा,** शेरगढ़, जोधपुर।
08.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	05.11.2023 से 11.11.2023 तक	**केशुआ,** सिरोही।
09.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	07.11.2023 से 10.11.2023 तक	**धरावा,** चूरू।
10.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	07.11.2023 से 10.11.2023 तक	**नोखा,** जैसलमेर।
11.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	16.11.2023 से 22.11.2023 तक	**सूरत,** गुजरात

दीपसिंह बैण्यकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

राणा पूंजा जी सोलंकी को कुछ इस तरह से भील घोषित किया गया

राजनैतिक लोग अपनी धारणाओं को जनता पर थोपने के लिए झूठे तथ्य गढ़ते हैं और फिर उनके सहारे अपने स्वार्थी एजेंडे को सिद्ध करते हैं। सामाजिक व्यवस्थाएं और इतिहास इनका प्रिय विषय होता है और उसके आधार पर ये अपनी राजनैतिक रोटियां सेकते हैं। देश की आजादी से पहले अंग्रेजों ने और आजादी के बाद वामपंथी इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास को अपने एजेंडे के तहत लिखकर विकृत किया। उनके बाद आज दक्षिणपंथी इतिहासकार उसी विकृत इतिहास को सुधारने के नाम पर अपने एजेंडे को थोपने का प्रयास कर रहे हैं। आज के दौर में राजनेताओं द्वारा जातियों को इतिहास की पहचान से जोड़कर उनका आक्रामक राजनीतिक इस्तेमाल किया जाने लगा है। विगत कुछ दशकों से राजपूतो के इतिहास के साथ सुनियोजित तरीके से छेड़छाड़ की जा रही है ताकि उसका राजनैतिक लाभ उठाया जा सके। इस कार्य में सभी विचारधाराओं के लोग शामिल हैं। कुछ संगठनों के द्वारा इस तरह के झूठे इतिहास को लिखवाने के संगठित प्रयास किए जा रहे हैं। जिनमे प्रमुख रूप से अपने आप को सांस्कृतिक संगठन कहने वाले हिंदुत्ववादी संगठनों द्वारा तथाकथित हिन्दू एकता के नाम पर यह राष्ट्र विरोधी कार्य किया जा रहा है। जातीय तुष्टिकरण की राजनीति के तहत राणा पूंजा जी सोलंकी को भील समुदाय में उत्पन्न होना बताकर दुष्प्रचार किया गया और पाठ्यपुस्तकों में इतिहासकारों ने भी बिना किसी ऐतिहासिक प्रमाण के उन्हें भील घोषित कर दिया।

आदिवासियों के वोटों के लालच में सभी सरकारों ने हिटलर के प्रसिद्ध प्रचार मंत्री जोसेफ गोएबल्स के सिद्धांत 'किसी झूठ को बार-बार दोहराने पर एक दिन वह सच मान लिया जाता है।' का अनुसरण करते हुए इस धारणा को पुष्ट किया कि राणा पूंजा भील थे और उनकी भीलवेश में मूर्तियाँ देशभर में लगवाने के लिए भरपूर सहयोग किया। जबकि उनके भील जाति में जन्म लेने के बारे में पुख्ता जानकारी इतिहास के किसी भी प्राथमिक स्रोत में दर्ज नहीं है। राणा पूंजा जी सोलंकी के वास्तविक इतिहास से अनभिज्ञ लोग बड़े पैमाने पर सुनियोजित तरीके से फैलाए गए इसी झूठ को सच मान बैठे थे लेकिन जैसे ही धीरे-धीरे प्रामाणिक इतिहास सामने आ रहा है तो उन सभी लोगो को भी समझ में आ रहा है कि उनको अब तक गलत इतिहास बताया जा रहा था। प्रतीकों की राजनीति करने वाले राजनैतिक एवं सांस्कृतिक संगठनों ने इस तरह के झूठे इतिहास को गढ़ने व बढ़ावा देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। गुजरात में सोलंकी राज्य के पतन के बाद इसी वंश की एक शाखा अजमेर जिले के भिनाय क्षेत्र में आकर रही। वहां से पहन्द्रवीं शती के अंतिम वर्षों में मेवाड़ के राणा रायमल के काल में सोलंकी भोजराज के पुत्र गोड़ा के बेटे मेवाड़ आए। दो पुत्रों - शंकरसिंह और सामंत सिंह को राणा रायमल ने झीलवाड़ा और रूपनगर की जागीरें दी। सन 1478 ई. में एक अन्य पुत्र रावत अखैराज ने मेवाड़ के भोमट क्षेत्र में आकर पानरवा के शासक जीवराज यदुवंशी को अपदस्थ कर अपना अधिकार स्थापित किया। सन 1567 ई. में मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह द्वारा चित्तौड़ त्यागने के बाद जब मुगल सेना ने उनका पीछा किया उस समय महाराणा उदयसिंह ने स्वयं की रक्षा के लिए भोमट क्षेत्र के पहाड़ी व घने वनीय भाग में शरण ली। उस समय पानरवा ठिकाने के शासक हरपाल ने उनके परिवार की सुरक्षा व सेवा की इसी से प्रसन्न होकर उन्होंने उनको राणा की उपाधि प्रदान की। उसके बाद हरपाल के उत्तराधिकारी पानरवा के अधिपति 'राणा' कहलाये। राणा अखेराज की वंश परम्परा में राणा पूंजा सोलंकी हुए। वे राणा हरपाल के पौत्र और राणा छत्रमल (दुदा) के पुत्र थे। संकट काल में मेवाड़ को न केवल राणा पूंजा बल्कि उनके बाद के वंशजों राणा राम एवं राणा चन्द्रभान के द्वारा क्रमशः महाराणा अमरसिंह व महाराणा राजसिंह को औरंगजेब के विरुद्ध सहयोग करने के प्रमाण ऐतिहासिक ग्रंथों में लिखे मिलते हैं।

राणा पूंजा को भील बताने की शुरूआत वैसे तो 80 के दशक के आस-पास आदिवासियों के मध्य कार्य करने वाले एक बड़े संगठन के माध्यम से प्रारम्भ हो गई थी जो हिंदुत्ववादी विचारधारा से संबद्ध रखता था। लेकिन ये मामला ज्यादा प्रकाश में उदयपुर नगर के मोती मगरी स्थित प्रताप स्मारक पर तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी द्वारा राणा पूंजा की मूर्ति के वर्ष 1989 में अनावरण के साथ आया। इस मूर्ति के परिचय में उन्हें भील बताया गया था तथा वेशभूषा भी भील जाति की ही प्रदर्शित की गई थी। इस मूर्ति के अनावरण के समय भी यह विवाद खूब उठा था। इसके बाद दूसरी बार ये विवाद वर्ष 1997 में तब उठा था जब पानरवा में राणा पूंजा की भील वेशभूषा में एक मूर्ति का अनावरण करने भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति के.आर. नारायण आने वाले थे और इस मूर्ति का अनावरण कार्यक्रम राजस्थान सरकार ने रखा था। उस कार्यक्रम को लेकर मेवाड़ राजघराने के महाराणा महेंद्रसिंह मेवाड़ ने भारत के राष्ट्रपति को पत्र लिखकर इस सम्बन्ध में अपनी आपत्ति दर्ज करवाई थी। इसके अलावा राणा पूंजा के वंशज पानरवा राजघराने के राणा मनोहरसिंह सोलंकी, महाराज रणधीर सिंह भिंडर, राव कर्णसिंह ओगना, राव हिम्मतसिंह नैनबारा, मेवाड़ क्षत्रिय महासभा के अध्यक्ष महेंद्रसिंह आगरिया एवं भूपाल नोबल संस्थान के भूतपूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष तेजसिंह बांसी ने तत्कालीन मुख्यमंत्री से मिलकर पानरवा में मूर्ति स्थापना के विवाद के विषय में ऐतिहासिक तथ्यों के साथ अपनी मनोभावना स्पष्ट रूप से बताई थी। उसी समय स्वतंत्रता सेनानी, भूतपूर्व सांसद एवं भारत की संविधान निर्मात्री परिषद के सदस्य श्री बलवन्तसिंह मेहता ने तत्कालीन राजस्थान सरकार के मुख्यमंत्री भैरोसिंह शेखावत द्वारा भीलू राजा राणा पूंजा के नाम से पानरवा में मूर्ति स्थापित करने की कार्यवाही को लेकर कड़ा विरोध जताया था। 1989 में स्व. राजीव गांधी द्वारा उदयपुर में प्रताप स्मारक पर जब इसी प्रकार की मूर्ति के अनावरण की कार्यवाही चल रही थी तब भी श्री मेहता समेत प्रदेश के कई बड़े इतिहासकारों ने मेवाड़ के इतिहास को झुठलाने वाली इस कार्यवाही का विरोध किया था। उस समय श्री मेहता ने भैरोसिंह शेखावत से कहा था कि 'आपकी सरकार एक ऐतिहासिक गलती करने जा रही है जो भविष्य में बहुत बड़ा विवाद पैदा करेगी।' बलवन्तसिंह मेहता द्वारा प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर इस बात का आग्रह किया गया था कि सरकार केवल कल्पना अथवा अनुमान का सहारा नहीं लेकर वास्तविक सत्य को मालूम करने हेतु जाँच करवाए। लिखे गए सभी पत्रों की प्रतिलिपियां आज भी मौजूद हैं। इस पत्र के बाद दिल्ली से मणिशंकर अय्यर जाँच करने हेतु उदयपुर आये थे और मेहताजी व मेवाड़ के प्रमुख विद्वानों से मिले थे। उसके कुछ समय बाद प्रताप स्मारक पर स्थापित मूर्ति से आपत्तिजनक शब्दों को हटा दिया गया था। उसी समय मेवाड़ के प्रतिष्ठित इतिहासकार डॉ. राजशेखर व्यास, डॉ. देवीलाल पालीवाल, देव कोठारी, स्वरूपसिंह चुंडावत, ओंकारसिंह राठौड़ और प्रो. प्रद्युम्न सिंह चुंडावत ने ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर बताया कि राणा पूंजा सोलंकी महाराणा प्रताप के समकालीन थे। राणा पूंजा मेवाड़ और मुगल सेनाओं के मध्य हुए इतिहास प्रसिद्ध हल्दीघाटी युद्ध मे अपनी भील सेना के साथ मेवाड़ की स्वतंत्रता के रक्षार्थ लड़े थे। उदयपुर स्थित 'प्राच्य विधा प्रतिष्ठान' में उपलब्ध ग्रन्थ क्रमांक 2680 'भोमट राज्य का इतिहास' हस्तलिखित ग्रन्थ में पानरवा और ओगना ठिकानों के सरदारों का सोलंकी राजपूत होना लिखा है। प्रसिद्ध इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड ने भी अपने इतिहास ग्रंथ 'एनल्स एंड एंटीक्विटिज ऑफ राजस्थान' में मेवाड़ भू भाग के भोमिया जागीरदारों का सोलंकी राजपूत होना बताया है। कर्नल टॉड की तरह जे.सी. बुक्स ने भी अपनी पुस्तक 'हिस्ट्री ऑफ मेवाड़' में पानरवा और ओगना के ठिकानेदारों का सोलंकी राजपूत होना बयान किया है। यहाँ तक कि महाराणा भूपाल सिंह जी के समय सर सुखदेव द्वारा लिखा गया मेवाड़ का गजेट भी राणा पूंजा के भील होने की बात का खंडन करता है। ऐसी स्थिति में पानरवा ठिकाने के जागीरदार अथवा राणा की परम्परा में जन्म लेने वाले राणा पूंजा को आदिवासी क्षेत्र के होने की वजह से ही भील कह देना सर्वथा अनुचित है। भील समुदाय में पूंजा नामक किसी भील नायक का होना इतिहास में नही पाया जाता जिसको कभी किसी महाराणा ने 'राणा' की उपाधि दी हो। उस कालखंड की पोथियों एवं वंशावलियों में केवल पानरवा के सोलंकी अधिपति को ही 'राणा' की उपाधि दिए जाने का उल्लेख है। किसी 'भीलू राजा' के होने का उल्लेख भी कहीं नही मिलता। पानरवा के राणा पूंजा के संदर्भ में अब तक उस समय की हस्तलिखित पोथियां एवं मेवाड़ के महाराणाओं द्वारा दिये गये सम्मान व अन्य सभी ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध हैं वे सभी राणा पूंजा को सोलंकी राजपूत होना ही सिद्ध करते हैं। पानरवा पर भील जाति के आधिपत्य का अथवा राणा पूंजा का भील वंश से सम्बंधित होने का एक भी ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नही है। 'भीलू राजा' नाम का उपयोग भी पिछले कुछ वर्षों से किया जाने लगा है जिसका व्यवहारिक दृष्टि से कोई अर्थ नहीं है। केवल राणा पूंजा को भील सिद्ध करने की दृष्टि से 'भीलू राजा' नाम को गढ़ा गया है। पुरानी पोथियों, शिलालेखों, पत्रावलियों, वंशावलियों तथा इतिहास ग्रंथो में राणा पूंजा सोलंकी को कहीं भी 'भीलू राजा' संबोधित नहीं किया गया है। पानरवा क्षेत्र से प्राप्त एक शिलालेख ने धुंधले इतिहास की इस गुफा में नई मशाल जगा दी है। राणा पूंजा को 1575 ई. के समकालीन शिलालेख सोलंकी वंशीय तथा भारद्वाज गौत्रीय बताता है।

राणा पूंजा सोलंकी को भील बताये जाने पर उनके वंशजों ने एक लंबी लड़ाई लड़ी है और आज भी वे इस लड़ाई को लड़ रहे हैं। पानरवा ठिकाने के भँवर परिक्षितसिंह सोलंकी कहते हैं कि 'जहाँ कहीं पर भी राणा पूंजा को भील बताकर सरकारों द्वारा उनकी भील वेशभूषा वाली मूर्ति लगाने का बड़े स्तर पर प्रयास किया गया था वहाँ हमारा परिवार उन सभी प्रयासों के विरुद्ध अपनी कड़ी आपत्ति दर्ज करवाने के साथ इसे इतिहास को विकृत करने की प्रवृत्ति बताता रहा है और आगे भविष्य में भी पुरजोर तरीके से बताता रहेगा।' इस प्रकार राणा पूंजा को भील बताना इतिहास विरुद्ध तथा सत्य को नकारना ही नहीं अपितु एकता के प्रतीक रहे भोमट क्षेत्र का सौहार्द नष्ट करना है। जो राजनैतिक एवं सांस्कृतिक संगठन अपने एजेंडे को स्थापित करने के लिए इस तरह के राष्ट्र विरोधी कार्य कर रहे है वे लोग न केवल सदियों से चली आ रही भील-राजपूत एकता को तोड़ने का प्रयास कर रहे हैं अपितु इन दोनों जातियों के मध्य आपसी प्रेम को खत्म कर-के स्थायी रूप से विष घोलने का अक्षम्य अपराध भी कर रहे हैं। अतः दोनों समाज के प्रबुद्ध लोगो को इस तरह के कुत्सित प्रयासों से सावधान रहने की आवश्यकता हैं ताकि सदियों पुराना प्रेम आने वाली सदियों तक भी बना रहे।

वीर बहादुर सिंह असाडा

बल्दरखा (शाहपुरा) में जयमल जी की मूर्ति का अनावरण

शाहपुरा जिले के बल्दरखा गांव में वीर योद्धा जयमल जी मेड़तिया की मूर्ति का अनावरण 17 सितंबर को समारोह पूर्वक हुआ जिसमें स्थानीय क्षेत्रवासियों ने सम्मिलित होकर चित्तौड़ की रक्षार्थ अपना बलिदान देने वाले वीर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। समता राम महाराज ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि एक समय था जब राजपूतों ने तलवार का प्रयोग करके जनता की रक्षा की थी। वर्तमान युग शिक्षा का युग है और आज क्षत्रिय जाति को तलवार की जगह कलम का प्रयोग करके अपना धर्म निभाना है। पूर्व राज्यपाल वीपी सिंह बदनोर ने कहा कि जयमल जी की भांति हमें भी आदर्श क्षत्रिय का जीवन जीना होगा। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने जयमल जी के स्मरण के अवसर पर उनके जैसा जीवन देने की प्रार्थना करने और उस प्रार्थना को अवतरित करने के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ का अनुसरण करने की बात कहते हुए सभी को दिल्ली में होने वाले जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण दिया। गोपालचरण सिंह बनेड़ा, भंवर सिंह पलाड़ा, मोती सिंह जोधा, बालकदास महाराज, प्रद्युम्न सिंह बडलियास आदि वक्ताओं ने भी अपने विचार रखे। श्री क्षत्रिय युवक संघ के मेवाड़-मालवा संभाग प्रमुख बृजराज सिंह खारडा सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

बनासकांठा प्रांत में संपर्क यात्रा व बैठकों का आयोजन

बनासकांठा प्रांत के विभिन्न गांवों में संपर्क यात्रा व बैठकों का आयोजन पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के अंतर्गत किया जा रहा है। इसी क्रम में 17 सितंबर को थराद स्थित शारदा विद्या मंदिर में एक बैठक का आयोजन हुआ जिसमें थराद और पालनपुर प्रांत के स्वयंसेवक उपस्थित रहे। 23 सितंबर को दांतीवाड़ा तहसील के पांसवाल गांव स्थित गंगेश्वर महादेव मंदिर परिसर में भी एक बैठक का आयोजन हुआ जिसमें तहसील के चौदह गांवों से समाजबंधु उपस्थित रहे। बैठक में पीलुडा में आयोजित होने वाले बालिका प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर में संख्या भेजने, उत्तर गुजरात के संभागीय स्नेहमिलन में भागीदारी एवं पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह में दांतीवाडा तहसील से अधिकाधिक संख्या में उपस्थिति के लक्ष्य तय किए गए एवं तदनुरूप दायित्व भी सौंपे गए। 24 सितंबर को पालनपुर तहसील के फतेहपुर स्थित शिव मंदिर में बैठक आयोजित की गई जिसमें पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह की तैयारियों पर चर्चा की गई। बैठक के बाद गांव में साप्ताहिक शाखा भी प्रारंभ की गई। तीनों बैठकों में प्रांत प्रमुख अजीत सिंह कुणघेर सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। 23 सितंबर को थराद व सांचौर तहसीलों के विभिन्न गांवों में संपर्क यात्रा का आयोजन भी किया गया। थराद तहसील के वाघासण, सवराखा एवं ताखुवा गांवों में तथा साँचोर तहसील के अचलपुर व डभाल गाँवों में संपर्क किया गया एवं पीलुड़ा शिविर, संभागीय स्नेहमिलन व जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण दिया गया। सिद्धराज सिंह पीलुडा, अरविंद सिंह नारोली व वजे सिंह नारोली यात्रा में शामिल रहे।

भीलवाड़ा में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के सहयोगियों की बैठक संपन्न

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के भीलवाड़ा जिले के सहयोगियों की बैठक 16 सितंबर को संपन्न हुई। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने जन्म शताब्दी समारोह की तैयारियों के लिए क्षेत्र में हो रहे संपर्क व अन्य तैयारियों के संबंध में चर्चा की व आगे के लिए लक्ष्य तय किए। संघ के मेवाड़-मालवा संभाग प्रमुख बृजराज सिंह खारडा ने श्री क्षत्रिय युवक संघ एवं श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की कार्यप्रणाली के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम में चावण्ड सिंह एकलिंगपुरा, उम्मेद सिंह पिपरोली, रणजीत सिंह झालरा, गजेन्द्र सिंह अमरगढ़ आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

मध्य गुजरात संभाग में संपर्क यात्रा का आयोजन

मध्य गुजरात संभाग द्वारा पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त विभिन्न गांवों में संपर्क यात्रा का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में 16-17 सितंबर को अहमदाबाद जिले में कड़ी तहसील के विडज, खावड, वेकरा, डरण गांव में, धोलका तहसील के गांगड़, कोठ, झणंद, वौंठा गांव में, साणंद तहसील के ददुंका, रेथल, कुंडल, विंछीया, गरोड़िया, चेखला, गोधावी, पींपण, मोडासर, कोलट, पलवाड़ा, मोरैया, नवापुरा, सनाथल व रतनपुरा गांव में संपर्क किया गया और समाजबंधुओं को दिल्ली में होने वाले पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण दिया गया। इसी प्रकार वडोदरा जिले के पोइचा व भादरवा गांव में भी संपर्क किया गया। संभाग प्रमुख अणदुभा काणेटी व वरिष्ठ स्वयंसेवक दिवानसिंह काणेटी के निर्देशन में सहयोगियों के अलग-अलग दल बनाकर संपर्क किया गया। 24 सितंबर को वडोदरा जिले में सावली तहसील के भादरवा, दोडका, वांकानेर, मौंकसी, पोइचा, रणजीतनगर, नटवरनगर, मंजूसर आदि गांवों में संपर्क किया गया। संपर्क के दौरान घर-घर जाकर 8 अक्टूबर को भादरवा गांव में होने वाले संभागीय स्नेहमिलन की आमंत्रण पत्रिका दी गई। 24 सितंबर को ही साणंद शहर में भी संपर्क अभियान चलाया गया जिसमें काणेटी गांव में होने वाले बालिका शिविर व शिहोर में होने वाले बालकों के शिविर में आने के लिए पात्र शिविरार्थियों व उनके परिजनों से संपर्क किया गया। चरोतर प्रांत प्रमुख अरविंदसिंह काणेटी सहयोगियों सहित संपर्क यात्रा में शामिल रहे।

भूमिका जोधा का अंडर-19 चैलेंजर ट्रॉफी में चयन

नागौर जिले के रसीदपुरा गांव की निवासी भूमिका जोधा पुत्री भंवर सिंह का अंडर-19 चैलेंजर ट्रॉफी क्रिकेट प्रतियोगिता हेतु चयन हुआ है। दाएं हाथ की बल्लेबाज भूमिका नागौर सीनियर महिला क्रिकेट में भी खेल चुकी है।

(पृष्ठ एक का शेष)

ममता के... लेकिन हमें अपने हृदय में यह टटोलने की आवश्यकता है कि जो कार्य हमारे पूर्वजों ने किया, क्या हम वैसा काम कर पा रहे हैं? यदि नहीं कर पा रहे हैं तो क्या हम स्वयं को क्षत्रिय कह सकते हैं? क्षत्रिय का अर्थ होता है जो क्षय से रक्षा करे। लेकिन क्या आज हम क्षय से दूसरों की रक्षा कर पाते हैं? दूसरों की छोड़ें, क्या हम स्वयं को भी पतित होने से बचा पाते हैं? पाबूजी को हम सात सौ वर्ष बाद भी याद कर रहे हैं लेकिन क्या हम कोई ऐसा कार्य कर रहे हैं जिसके कारण हमें भी आज से सात सौ वर्ष बाद कोई याद करेगा? इन बातों पर विचार करें तो पाएंगे कि आज हम अपने कर्त्तव्य को भूल चुके हैं, अपने क्षत्रियत्व को भूल चुके हैं। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ ऐसे जयंती कार्यक्रमों के बहाने आप को एकत्रित करता है और यह याद दिलाने का प्रयास करता है कि हम किन महान पूर्वजों की संतान है, हमारी पहचान को याद दिलाने का प्रयास करता है और हमें अपने पूर्वजों की ही तरह क्षात्रधर्म के पालन का मार्ग बताता है। उपर्युक्त बात माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने पाली शहर स्थित वंदे मातरम एकेडमी में आयोजित लोकदेवता पाबूजी राठौड़ की जयंती पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने सभी को पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह हेतु दिल्ली आने का निमंत्रण देते हुए कहा कि जिस प्रकार हीरक जयंती पर हमारे समाज ने अनुशासन और एकता का अद्वितीय आदर्श प्रस्तुत किया था, उसी प्रकार पूज्य तनसिंह जी की जन्म शताब्दी के अवसर पर भी हमें समाज के विराट स्वरूप के प्रकटीकरण का हिस्सा बनना है। पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त 17 सितंबर को आयोजित इस कार्यक्रम को प्रोफेसर जसवंत सिंह ठाकुरला, राजेंद्र सिंह भाटी, पाली के प्रादेशिक परिवहन अधिकारी प्रकाश सिंह भदरू, पाली राजपूत सभा के अध्यक्ष छोटू सिंह बर, ओम कंवर ने भी संबोधित किया। जालौर संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

बेंगलुरु व हैदराबाद में मनाई पाबूजी राठौड़ और राव जैताजी की जयंती: कर्नाटक के बेंगलुरु शहर में लगने वाली श्री क्षत्रिय युवक संघ की बालकों व बालिकाओं की शाखा द्वारा संयुक्त रूप में पाबूजी राठौड़ और राव जैता जी की जयंती 17 सितंबर को मनाई गई। विजय प्रताप सिंह रायरा ने पाबूजी राठौड़ और जैता जी के जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। वीरेंद्र सिंह पादरू ने पाबूजी राठौड़ का तथा सूर्यपाल सिंह बद्दू ने जैता जी का जीवन परिचय दिया। खुशवीर सिंह वाडिया और राम सिंह संग्राम सिंह की ढाणी ने भी अपने विचार रखे और अक्टूबर माह में विजयवाड़ा में होने वाले प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर तथा पूज्य श्री तन सिंह जी जन्म शताब्दी कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी। हैदराबाद शाखा द्वारा इमलीबन पार्क में पाबूजी राठौड़ एवं राव जैताजी की जयंती 24 सितंबर को मनाई गई। मुंबई की तनेराज शाखा में भी 24 सितंबर को पाबूजी की जयंती मनाई गई। प्रांत प्रमुख रणजीत सिंह आलासण सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

प्रहलाद सिंह नांगल का देहावसान

प्रहलाद सिंह जी

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक **प्रहलाद सिंह जी नांगल** का देहावसान 20 सितंबर को हो गया। उन्होंने अपने जीवन काल में श्री क्षत्रिय युवक संघ के कुल 37 शिविर किए जिनमें दो उच्च प्रशिक्षण शिविर, 15 माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर एवं 20 प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर शामिल हैं। 7 से 14 अक्टूबर 1951 तक आयोजित लाल सागर माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर उनका प्रथम शिविर था। पथप्रेरक परिवार परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते हुए शोकाकुल परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

लूणकरण सिंह तेना को पितृ शोक

श्री नरपत सिंह राठौड़

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक लूणकरण सिंह तेना के पिता **श्री नरपत सिंह राठौड़** का देहावसान 16 सितंबर को 91 वर्ष की आयु में हो गया। भारतीय सेवा के पूर्व सैनिक नरपत सिंह जी ने 1962 के भारत-चीन युद्ध एवं 1965 एवं 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में भाग लिया था। उन्हें उनकी वीरता के लिए तत्कालीन राष्ट्रपति केआर नारायणन एवं सेना प्रमुख द्वारा प्रशस्ति पत्र व मैडल से सम्मानित भी किया गया था। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

'परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्' है संघ का लक्ष्य: संघप्रमुख श्री

(जैसलमेर के झाबरा में मनाया राव डेल्हा जी का शौर्य स्मृति दिवस)

डेल्हा जी के जीवन में त्याग और बलिदान ही प्रधान तत्व रहा। जिस प्रकार से दुगार्दास जी ने जोधपुर राजवंश की रक्षा की, उसी प्रकार का जीवन चरित्र डेल्हा जी का भी रहा जिन्होंने जैसलमेर राजवंश को बचाने के लिए सरंक्षक की भूमिका निभाई। श्री क्षत्रिय युवक संघ डेल्हा जी जैसे महापुरुषों की जयंतियां मना कर हमारे हृदय में यह भाव स्थापित करना चाहता है कि हमारे इन पूर्वजों ने जिस प्रकार के कृत्य किए हैं, उसी प्रकार के कृत्यों की एक परंपरा पुनः हमारे समाज में बने। डेल्हा जी को हम क्षत्रिय क्यों कह सकते हैं? उनमें क्षत्रिय के क्या गुण थे जिनके कारण हम उन्हें याद कर रहे हैं? वह है क्षय से बचाने का गुण। जो नष्ट होने से बचाता हो, जो 'परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्' का मंत्र लेकर चलता हो, वही वास्तव में क्षत्रिय है। उपर्युक्त बात माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बेण्याकाबास ने 24 सितंबर को जैसलमेर जिले के चांधन क्षेत्र के झाबरा गांव में पूज्य श्री तनसिंह जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त आयोजित राव डेल्हाजी शौर्य स्मृति दिवस समारोह को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि हमने क्षत्रियत्व की उस परंपरा पर चलना बंद कर दिया इसलिए आज से 77 वर्ष पूर्व पूज्य तनसिंह जी ने इस प्रकार के एक सांचे का निर्माण किया, एक ऐसी प्रयोगशाला का निर्माण किया, ऐसी कृत्रिम शिक्षण शाला को प्रारंभ किया जिससे गुजरने के बाद यह संभावना है कि हम उस क्षत्रियत्व को प्राप्त करें। संघ 'परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्' के लक्ष्य को लेकर क्षत्रियत्व के निर्माण का कार्य कर रहा है। वह ढाणी ढाणी, गांव गांव जाकर उन लोगों को चुनता है जिन्हें डेल्हा जी, दुर्गा दास जी, महाराणा प्रताप, हाड़ी रानी, मीरा, ध्रुव और प्रहलाद के रूप में निर्मित किया जा सके। यह आवश्यक नहीं है कि हम वैसे बन गए हों, लेकिन जिस राह पर हम चलने की बात कर रहे हैं, वह राह वहीं जाकर रुकती है। उस राह को यदि हमने पकड़ लिया तो चाहे हम धीरे चलें या तेज, एक न एक दिन उस मंजिल पर जरूर पहुंचेंगे। जैसलमेर संभाग प्रमुख तारेंद्र सिंह झिनझिनयाली ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी, साथ ही आगामी वर्ष में जनवरी माह में दिल्ली में आयोजित होने वाले पूज्य तनसिंह जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण दिया। कंवराज सिंह चांधन द्वारा राव डेल्हा जी की वंशावली से अवगत करवाया गया। महिला सशक्तिकरण के विषय में सुनीता भाटी ने अपने विचार रखते हुए समाज की बेटियों में शिक्षा की अलख जगाने का आह्वान किया। प्रधान प्रतिनिधि लखसिंह ने इस कार्यक्रम को हर वर्ष आयोजित करने की बात कही। कार्यक्रम में पूर्व विधायक सांग सिंह, पूर्व विधायक छोटू सिंह, पूर्व जिला प्रमुख अंजना मेघवाल, हाथी सिंह मूलाना, लखसिंह चांधन सहित अनेकों जनप्रतिनिधि एवं जैसलमेर जिले के नोख, भैसड़ा, सोढ़ाकोर, डेलासर, धायसर, मूलाना दवाड़ा, बड़ोडा गांव, चांधन, सगरा, साँवला, भैरवा, झाबरा, जेठा, हमीरा आदि गांवों के समाजबंधु उपस्थित रहे।

ऐश्वर्य प्रताप को एशियाई खेलों में दोहरी सफलता

निशानेबाज ऐश्वर्य प्रताप सिंह तोमर ने अपनी टीम के रुद्रांक्ष बालासाहेब पाटिल व दिव्यांश सिंह पंवार के साथ मिलकर चीन के हांगझोउ में आयोजित हो रहे 19वें एशियन खेलो में 10 मीटर एयर राइफल पुरुष टीम स्पर्धा में चीन को पछाड़ कर स्वर्ण पदक जीता। साथ ही उन्होंने पुरुषों की 10 मीटर एयर राइफल एकल प्रतियोगिता में भी कांस्य पदक जीता है। मध्य प्रदेश के खरगोन जिले के रतनपुर गाँव के सामान्य किसान राजपूत परिवार में जन्मे ऐश्वर्य प्रताप इससे पूर्व विश्व कप में पुरुषों की 50 मीटर थ्री पोजीशंस स्पर्धा में भी स्वर्ण पदक जीत चुके हैं।

दिव्याकृति सिंह ने एशियाई खेलों में जीता स्वर्ण पदक

नागौर जिले के पीह गांव की निवासी दिव्याकृति सिंह ने चीन के हांगझू में 23 सितंबर से 8 अक्टूबर तक आयोजित हो रहे एशियाई खेलों में ड्रेसाज डिसिप्लिन भारतीय घुड़सवारी दल का प्रतिनिधित्व करते हुए स्वर्ण पदक जीता है। दिव्याकृति को फेडरेशन इक्वेस्ट्रे इंटरनेशनल (एफईआई) ग्लोबल ड्रेसाज रैंकिंग में एशिया की सर्वश्रेष्ठ एथलीट चुना जा गया था। पूरी दुनिया में वे 14वें स्थान पर हैं। दिव्याकृति पोलो के प्रसिद्ध खिलाड़ी विक्रम सिंह की पुत्री व संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक, लेखक कर्नल हिम्मत सिंह पीह की पौत्री है।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्वयंसेविका

राजश्री बेदाना

सुपुत्री श्री अचल सिंह बालोत

और

सुमन बेदाना

सुपुत्री श्री अचल सिंह बालोत

(दोनों बहिनें) के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक भर्ती - 2022 में **अध्यापक लेवल - 2** (अंग्रेजी विषय) में अंतिम चयन होने पर

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

शुभेच्छु:

चन्दन सिंह मालपुरा | ईश्वर सिंह अगवरी | कल्याण सिंह मोरुआ | जितेन्द्र सिंह अगवरी

गोपाल सिंह मोरुआ | विक्रम सिंह मालपुरा | जितेन्द्र सिंह डोडियाली | राजवीर सिंह मोरुआ

श्रीपाल सिंह मादड़ी | महावीर सिंह सेदरिया | आसोत्रपाल सिंह मोरुआ | वीर बहादुर सिंह असाडा

एवं समस्त बालोत पट्टा, जिला-जालोर

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org